फ़िल्म समीक्षा

क्यों करें चिंता ?

ऑस्कर पुरस्कार विजेता डॉक्यूमेंटरी फ़िल्म *एन इनकन्वीनिएंट ट्रुथ* पर्यावरण में आते बदलावों के बारे में हमारी आंखें खोलती है।

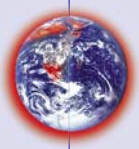

अरुंधति दास

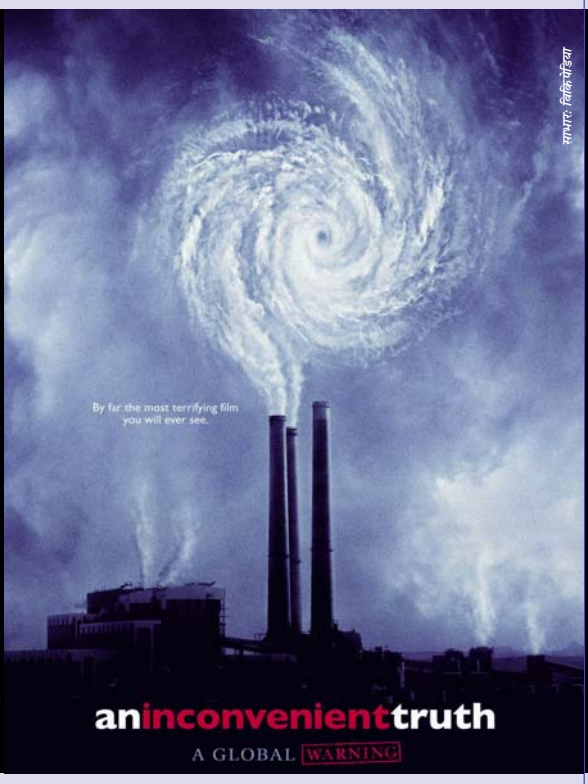

साभार: विकिपीडिया

सरल संदेश, बिना उपदेश दिए स्पष्ट शब्दों में, पूरे विश्वास से दी गई चेतावनी। *एन इनकन्वीनिएंट ट्रुथ* कटु सच्चाइयों को बिना चाशनी में लपेटे या दर्शक को डराए बिना जैसी वे हैं, वैसी ही प्रस्तुत करती है। तथ्य अपने आप में चौंका देने वाले हैं, उन्हें डरावनी शब्दावली का सहारा नहीं चाहिए।

पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति अल गोर की इस पुरस्कृत, चर्चित डॉक्यूमेंटरी फ़िल्म की समीक्षा को लेकर मेरे मन में खास उत्साह नहीं था। मुझे लगा था कि एक दोपहर पर्यावरण के क्षरण के बारे में अखबारों के सम्पादकीय पृष्ठों पर छपने वाली गम्भीर चेतावनियों को पर्दे पर देखते चौपट होगी। लेकिन फ़िल्म शुरू हुई तो पांच मिनट में ही पर्यावरण को हुई भारी क्षति के अकाट्य प्रमाणों को देखते, औद्योगिकीकरण की अंधी दौड़ में होश खो बैठी एक पीढ़ी की गतिविधियों के कारण मेरी उदासीनता गहरे आश्चर्य और अभिभूतता में बदलने लगी।

मेहनत से जुटाई गई सूचनाएं और जलवायु में आते बदलावों, प्रसुप्त रोगों

अगले पृष्ठ पर जारी...

के फिर सिर उठाने, संक्रामक रोगों के वाहकों की वृद्धि, और समुद्री तूफानों, बाढ़ों और सूखे के मुखर बिम्ब अविश्वास की गुंजाइश ही नहीं रहने देते। अगर इन दावों को गुजरे दिनों के एक राजनीतिज्ञ की बड़बड़ाहट कह कर खारिज़ करना भी चाहें तो सिकुड़ते हिमनदों, पिघलती बर्फानी चोटियों, लुप्त होती नदियों, जानलेवा रोगों का शिकार हुए मनुष्यों और हज़ारों एकड़ हरियाली को नष्ट करते कीटनाशकों को नज़रंदाज़ करना

डॉक्यूमेंटरी फिल्म

एन इनकन्वीनिएंट ट्रुथ

मुंबई, कोलकाता, चेन्नई
और नई दिल्ली की

अमेरिकन लाइब्रेरी

में देखने के लिए उपलब्ध है।

मुश्किल है। ''चेतावनियां जब एकदम सही और वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित हों तो सभी देशों में रह रहे हम मनुष्यों का यह दायित्व बनता है कि चेतावनियां सुनी जाएं और उन पर कार्रवाई हो।'' फिल्म के इस संदेश को अनसुना कैसे किया जाएगा?

फ़िल्म प्रतिक्रिया नहीं, कार्रवाई की मांग करती है। उत्तर उपलब्ध करवाने के बजाय परेशान कर देने वाले प्रश्न पूछती फ़िल्म दर्शक की अंतरात्मा को झकझोरती है- ''क्या आप जीने का अपना तरीका बदलने को तैयार हैं? क्या हम अमेरिकी कठिन काम करने में समर्थ हैं?'' उसका छिपा व्यंग्य चौंकाता है- ''हमारे पास सब कुछ है सिवाय शायद राजनीतिक इच्छा के। लेकिन अमेरिका में राजनीतिक इच्छा एक नवीकरणीय संसाधन है'' गोर की ईमानदारी मन को छू लेती है, ''अंततः पर्यावरण राजनीतिक नहीं, नैतिक मुद्दा है।''

अरुंधति दास *नई दिल्ली की एक पत्रिका में सहायक संपादक हैं।*